Knowledgeable Research Vol.1, No.2, September 2022.

Web: http://www.knowledgeableresearch.com/

डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दार्शनिक एवं शैक्षिक चिंतन

अमित गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर
शिक्षक शिक्षा विभाग
स्वामी शुकदेवानन्द कॉलेज, शाहजहाँपुर (उ०प्र०)

ईमेल : coolamitgupta12@gmail.com

****

सारांश : हमारा देश अनंतकाल से ही शिक्षा एवं संस्कृति की धरोहर रहा है। हमारे देश में एक से एक महान विचारक, चिन्तक, शिक्षाविद, लेखक, तर्कशास्त्री एवं समाज सुधारक आदि हुए हैं, जिनमें महात्मा बुद्ध, महावीर स्वामी, स्वामी विवेकानन्द, स्वामी रामतीर्थ, गुरु रविन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन आदि अनेक महापुरुष हुए हैं। आधुनिक काल के शिक्षाविदों और दार्शनिको में राधाकृष्णन का नाम अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। डॉ० राधाकृष्णन ने शिक्षा के महत्त्व उसकी दार्शनिकता तथा पुराने शिक्षा सिद्धान्तों को समझकर आधुनिक काल की शैक्षिक आवश्यकता का अध्ययन करके अपने शैक्षिक विचारो द्वारा साम्य स्थापित करने का सफल प्रयास किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों के अध्ययन पर आधारित है। इस शोध पत्र में शिक्षा के संप्रत्यय, शिक्षा के उद्देश्य, विद्यालय, शिक्षक, अनुशासन, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, शिक्षा का माध्यम तथा स्त्री शिक्षा के सम्बन्ध में डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचारों को संकलित करने का प्रयास किया गया है साथ ही शिक्षा के क्षेत्र में डॉ० राधाकृष्णन के महत्वपूर्ण योगदानों को भी सम्मिलित किया गया है।

मुख्य बिन्दु : शिक्षा संप्रत्यय, उद्देश्य, विद्यालय, शिक्षक, अनुशासन, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, स्त्री शिक्षा।

****

जीवन परिचय : डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म तमिलनाडु के तिरुतनी ग्राम (जो तत्कालीन मद्रास से लगभग 64 कि० मी० की दूरी पर स्थित है) में 5 सितम्बर 1888 को एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सर्वपल्ली वीरास्वामी और माता का नाम सीताम्मा था। राधाकृष्णन के पुरखे पहले कभी सर्वपल्ली नामक ग्राम में रहते थे और 18वीं शताब्दी के मध्य में उन्होंने तिरूतनी ग्राम की ओर निष्क्रमण किया था। लेकिन उनके पुरखे चाहते थे कि उनके नाम के साथ उनके जन्मस्थल के ग्राम का बोध भी सदैव रहना चाहिये। इसी कारण उनके परिजन अपने नाम के पूर्व सर्वपल्ली धारण करने लगे थे।

डॉ० राधाकृष्णन एक गरीब किन्तु विद्वान ब्राह्मण की सन्तान थे उनके पिता राजस्व विभाग में काम करते थे। उन पर बहुत बड़े परिवार के भरण-पोषण का दायित्व था। वीरास्वामी के पाँच पुत्र तथा एक पुत्री थी। राधाकृष्णन का इनमें दूसरा स्थान था उनके पिता काफी कठिनाई के साथ परिवार का निर्वहन कर रहे थे। इस कारण बालक राधाकृष्णन को बचपन में कोई विशेष सुख प्राप्त नहीं हुआ।

डॉ० राधाकृष्णन का दार्शनिक चिंतन :

तत्व मीमांसा : डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार ईश्वर एवं जीव दोनों उपाधिग्रस्त हैं। दोनों ही सीमित एवं सापेक्ष होते हैं। ऐसी स्थिति में यदि ईश्वर ब्रह्म है और जीव तथा ब्रह्म में सात्विक दृष्टि से अभेद है तो ईश्वर और जीव में उसके अनुसार भेद उतना अधिक नहीं रह जाता है परन्तु जहाँ ईश्वर सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान और सर्वत्र विद्यमान है, वहाँ जीव प्रत्यय नितांत लघु एवं दुर्बल है। ईश्वर अविद्या मुक्त है उसकी सीमाएं उसके ज्ञान को सीमित एवं परिच्छिन्न नहीं करती हैं। ईश्वर की सीमा शुद्ध तत्व से निर्मित होने के कारण अविद्या को उत्पन्न नहीं करती, बल्कि सृष्टि की रचना में उसकी सहायता करती है, परन्तु यह जीव के लिए अविद्या को उत्पन्न करके उसे भ्रमित करती है। चूंकि सृष्टि रचना में ईश्वर की कोई व्यक्तिगत इच्छा नहीं निहित रहती, इसलिए यह अकर्ता है परन्तु जीव कर्ता है। ईश्वर पूज्य है एवं कर्मानुसार जीवों को पुरस्कृत करता है जीव पूजक है और दिव्य से अपनी उत्पत्ति के बारे में अनभिज्ञ रहता है।

ज्ञान मीमांसा : डॉ० राधाकृष्णन सत्य को आत्मानुभव का विषय मानते हैं। यह आत्मानुभव अथवा सत्यानुभूति धार्मिक अनुभूति है और केवल जिज्ञासा और साधना द्वारा ही सम्भव है। यह धार्मिक अनुभूति स्वत: ही सिद्ध और स्वत: प्रमाण है, परन्तु तर्क निरपेक्ष या बुद्धि निरपेक्ष नहीं बल्कि तर्क और बुद्धि के ऊपर है। ज्ञानात्मक अनुभव के तीन साधन हैं इन्द्रियानुभव, तर्क, बुद्धि और प्रज्ञा (प्रतिभा ज्ञान)। इन्द्रियानुभव का विषय ज्ञान का क्षेत्र हैं। इस क्षेत्र को ही हम बाह्य जगत की संज्ञा देते हैं। इन्द्रियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान विज्ञान का आधार हैं। बौद्धिक ज्ञान, विश्लेषण एवं संश्लेषण से प्राप्त किया जाता है। विश्लेषणात्मक होने के कारण बुद्धि जीवन को उसकी समग्रता में ग्रहण नहीं करती है। वह वस्तुओं को पृथक और खंडित करके ही उनका अध्ययन करती है।

धर्म मीमांसा : धर्ममीमांसीय दृष्टि से ईश्वर और जीव परस्पर सेव्य एवं सेवक के रूप में सम्बन्धित हैं. परन्तु तत्वमीमांसीय दृष्टि से यही जीवन ब्रह्म से उसी प्रकार सम्बन्धित है, जिस प्रकार चिंगारी अग्नि से । डॉ० राधाकृष्णन आत्मा को मुक्तावस्था में भी ब्रह्म में लीन नहीं मानते हैं, उनके अनुसार उसका अपना पृथक अस्तित्व रहता है। मुक्त होने पर उसे ब्रह्म का सायुज्य(एक में मिल जाना अर्थात मोक्ष) ही प्राप्त होता है, तादात्म्य (पूर्णत:) नहीं। परा विद्या और अपरा विद्या में कोई विशेष अन्तर नहीं है। अपरा विद्या की चरम परिणति ही परा विद्या है अपरा विद्या सृष्टि या जगत को सत्य अवश्य मानती है, परन्तु सृष्टि या जगत के स्वरूप से स्पष्ट है कि ब्रह्म ही परम या अन्तिम सत्य है। मोक्ष की प्राप्ति द्वारा जगत की सत्ता का निराकरण या विसर्जन न होकर उसके प्रति तथाकथित मिथ्या दृष्टि का ही निराकरण होता है।

धर्म और विज्ञान : डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार धर्म और विज्ञान दोनों का ही वर्तमान स्वरूप दोषपूर्ण है। वे यह स्वीकार करते हैं कि पूर्व के दर्शन धर्म पर और पश्चिम के दर्शन विज्ञान पर आवश्यकता से अधिक बल देने के कारण एकांगी हो गए हैं। पश्चिम के विज्ञान ने मौलिक सुख-समृद्धि प्रदान करके जीवन को निखार दिया है तथा पूर्व ने आन्तरिक उन्नति और समृद्धि के लिए धर्म की वांछनीयता पर जोर दिया है, किन्तु यदि विज्ञान प्रदत्त बुद्धि संशय एवं मौलिकता को जन्म देती है तो धर्म प्रदत्त आस्था अबौद्धिकता और अंधविश्वास को उत्पन्न करती है। फलतः वैज्ञानिक बुद्धि और अंधविश्वासी आस्था दोनों ही जीवन का समुन्नयन करने में सक्षम हैं। जहाँ विज्ञान प्रकृति विजय को ही सब कुछ मानने लगा है, वहाँ धर्म अंधविश्वासी प्रचलनों और रूढ़ियों से ग्रस्त है। आध्यात्मिकता और वैज्ञानिक ज्ञान का समन्वय ही जीवन को सुख तथा संतोष प्रदान कर सकता है। पश्चिम को यदि आध्यात्मिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है तो पूर्व को वैज्ञानिक पुनर्जागरण की आवश्यकता है।

डॉ० राधाकृष्णन का शैक्षिक चिंतन :

डॉ राधाकृष्णन का शिक्षा दर्शन भारतीय संस्कृति के प्रति उदार दृष्टिकोण तथा विश्वबंधुत्व की भावना से ओत प्रोत है। उन्होंने सार्वजनिक रूप से माना कि व्यक्ति के विचारों को श्रेष्ठ बनाने में शिक्षा की अहम भूमिका है। डॉ राधाकृष्णन के जीवन पर स्वामी विवेकानन्द, गुरु रवीन्द्रनाथ तथा महात्मा गांधी जी के दर्शन का अत्यंत ही गहरा प्रभाव पड़ा जिसके फलस्वरूप उनके शिक्षा दर्शन में भारतीय संस्कृति के प्रति उदार भाव, धार्मिक, नैतिक तथा लोक कल्याणकारी विचारों का सामंजस्य तथा विश्वबंधुत्व की भावना का समावेश देखने को मिलता है हिन्दू धर्म तथा उसकी उदारवादी मान्यताओं के प्रति उनका स्नेह अविभाज्य तथा अकाट्य है। शिक्षा का ध्येय तभी पूर्ण हो सकता है जब वह व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सके। डॉ राधाकृष्णन के शिक्षा दर्शन में धार्मिक, नैतिक कल्याण तथा सर्व धर्म समभाव, सहयोग, भारतीय संस्कृति की झलक तथा विश्वबंधुत्व की भावना की प्रमुखता निहित है।

शिक्षा का संप्रत्यय : डॉ० राधाकृष्णन शिक्षा को जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया मानते हैं, जिसमें मानव शिक्षक से सीखता है स्वयं सीखता है, जीवन तथा उसके अनुभवों से सीखता है, प्रत्येक क्षण, प्रत्येक कदम पर सीखता है, इस प्रकार वह सतत् रूप से आजीवन सीखता रहता है। डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार "शिक्षा मात्र सूचनाओं को प्रदान करना नहीं है यह संवेगों का प्रशिक्षण है" उनके अनुसार शिक्षा का प्रयोजन मानव में निहित गुणों का विकासोन्मुख बनाना है जिससे व्यक्ति ज्ञान एवं अज्ञान में, उचित एवं अनुचित में, सत्य एवं असत्य में विवेक पूर्वक अन्तर कर सकें और जीवन के दोनों पक्ष सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक में सामंजस्य स्थापित करते हुये नैतिक जीवन जी सकें।

शिक्षा के उद्देश्य : डॉ राधाकृष्णन ने शिक्षा का उद्देश्य मानववादिता तथा अंतर्राष्ट्रीयवादिता माना है शिक्षण में शिक्षा का उद्देश्य आत्म अभिव्यक्ति है जो कि भाषा पर अधिकार से संभव है। डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार अंतःज्ञान के विकास के अभाव में कोई भी शिक्षा पूर्ण नहीं है। डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा का वास्तविक

उद्देश्य आंतरिक शक्तियों को प्रशिक्षित, विकसित तथा अनुशासित करने के साथ ही बालक को परंपरागत वातावरण से हटाकर हर प्रकार की स्वतंत्रता की ओर ले जाना है। वे शिक्षा द्वारा छात्रों में आध्यात्मिक विकास कर उनमें सर्वजन हिताय की भावना का विकास करना चाहते थे क्योंकि निस्वार्थ सेवा भाव तथा परमात्मा में आस्था रखने वाला व्यक्ति ही समाज एवं राष्ट्र का उत्थान कर सकता है इस प्रकार उनकी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक के व्यक्तित्व का बहिर्मुखी विकास तथा शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं आध्यात्मिक शक्तियों का समन्वित उन्नयन है।

अतः इस प्रकार डॉ० राधाकृष्णन ने शिक्षा के अग्रलिखित उद्देश्यों को निर्धारित किया है।

1. ज्ञान का विकास करना।
2. ज्ञान को आत्मसात करना।
3. मानव आत्मा का विकास करना।
4. चरित्र निर्माण करना।
5. अन्तर्दृष्टि का विकास करना।
6. संकल्प शक्ति का विकास करना।
7. धर्म भावना का विकास करना।
8. लोकतंत्र का संरक्षण एवं पोषण।
9. नेतृत्व की क्षमता का विकास करना।
10. भाईचारे या विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करना।
11. सादा जीवन उच्च विचार के भारतीय आदर्श को स्वीकृति।

विद्यालय : विद्यालय के सम्बन्ध में डॉ० राधाकृष्णन कहते है कि सिर्फ हीं इमारतें विद्यालय नहीं है बल्कि अध्यापक शिक्षार्थी और ज्ञान का अर्जन ही विद्यालय की आत्मा है। विद्यालय किसी राष्ट्र के बौद्धिक जीवन के पवित्र मंदिर हैं। डॉ० राधाकृष्णन ने कहा है कि विद्यालय का कर्तव्य है कि व्यक्ति को शाश्वत मूल्यों के प्रति श्रद्धावान बनाए और सामाजिक घटनाओं के प्रति भी जागरुक रखें। विद्यालय को चाहिए कि व्यक्तियों की आत्मा को सजीव बनाएं और राष्ट्र को चिंतन बुद्धि प्रदान करें। किसी शिक्षा तंत्र की विशिष्टता इसी से है कि वह किस बात पर अधिक जोर देता है यह निश्चित है कि विद्यालय तकनीकी और कार्यकर्ताओं को तैयार करने का एक केंद्र मात्र ही नहीं, अपितु जब उसको इस प्रकार से कार्यकर्ता तैयार करने भी होते हैं तो उसका मुख्य उद्देश्य व्यवसायिक और प्रजातांत्रिक मूल्यों में होने वाली खाई को पटना होना चाहिए।

शिक्षक : डॉ० राधाकृष्णन ने कहा था कि शिक्षक उन्हीं लोगों को बनना चाहिए जो सर्वाधिक योग्य व बुद्धिमान हों , जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होता और शिक्षा को एक मिशन नहीं मानता है, तब तक अच्छी शिक्षा की कल्पना नहीं की जा सकती है। शिक्षक को जिज्ञासु प्रवृत्ति का होना चाहिए। किसी भी

संस्थान का महत्व उसके भवन, प्रयोगशाला, साज-सज्जा या अन्य अभिकरणों से नहीं होता वरन उसका महत्व उस में कार्यरत योग्य शिक्षकों से होता है। पुस्तकें केवल सूचनाएं प्रदान करती हैं, जबकि शिक्षक अपने व्यक्तित्व से शिक्षार्थियों के मस्तिष्क में शिक्षा रूपी ज्ञान की अविरल गंगा की धारा प्रवाहित करते हैं।

अनुशासन : अनुशासन के संदर्भ में डॉ० सर्वपल्ली स्वनुशासन को स्वीकार करते है जो प्रगतिशीलता का परिचायक है। अनुशासन केवल विद्यार्थियों के लिए ही आवश्यक नहीं है, जीवन के हर क्षेत्र में इसका उपयोग है लेकिन इसका अभ्यास कम उम्र में अधिक सरलता से हो सकता है। अनुशासनहीनता को अच्छी शिक्षा व उचित वातावरण देकर नियंत्रित किया जा सकता है।

शिक्षण विधि : डॉ० राधाकृष्णन ने शिक्षण विधियों के निर्धारण में शिक्षक की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है। शिक्षक विषय-वस्तु तथा छात्रों की आवश्यकता के अनुसार इसका निर्धारण करे। शिक्षक विभिन्न शैक्षिक स्तरों पर छात्रों के मन-मस्तिष्क को ढालने के लिये आवश्यकतानुसार विधियों का निर्धारण करे जिससे वह उनको भविष्य की चुनौतियों के अनुसार समर्थ बना सके। उन्होंने चिन्तन-मनन, व्याख्यान, लिखित कार्य, ट्यूटोरियल आदि पर बल दिया। डॉ० राधाकृष्णन ने छात्र को मशीनी आदमी बनाने की अपेक्षा चिन्तनशील, निर्णयशील तथा क्रियाशील बनाने पर बल दिया।

पाठ्यक्रम : डॉ० राधाकृष्णन ने पाठ्यक्रम में वैज्ञानिक तथा आध्यात्मिक दोनों विषयों को स्थान दिया है। उन्होने देश की आवश्यकताओं के अनुरूप ही शिक्षा देने के लिए विज्ञान और शिल्प के साथ ही साथ पाठ्यक्रम में दर्शन, विज्ञान, नीतिशास्त्र, आध्यात्म, भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं मनोविज्ञान के साथ ही साथ छात्राओं के लिए पाकशास्त्र, हस्तकौशल, गृह विज्ञान, तथा ललित कलाओं को स्थान दिया।

माध्यम : डॉ० राधाकृष्णन के अनुसार बच्चे की शिक्षा का सबसे स्वाभाविक माध्यम उसकी मातृभाषा है, भारत में यह स्थान प्रादेशिक भाषा को देना चाहिए। उन्होने प्रारम्भिक शिक्षा के लिए प्रादेशिक भाषा, माध्यमिक की शिक्षा के लिए प्रादेशिक भाषा, हिन्दी भाषा, संस्कृत भाषा तथा उच्च शिक्षा के लिए अंग्रेजी भाषा को शिक्षा के माध्यम के रूप में स्वीकार किया।

स्त्री शिक्षा : डॉ० राधाकृष्णन ने स्त्री शिक्षा को राष्ट्र निर्माण के लिये महत्त्वपूर्ण माना है "शिक्षित महिलाओं के बिना कोई शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकता।" उन्होंने स्त्री-शिक्षा को परिवार निर्माण के लिये महत्वपूर्ण माना है। इस दृष्टि से उन्होंने उनकी शिक्षा के लिये विशिष्ट पाठ्यक्रमों के आयोजन पर बल दिया हैं इनमें गृह अर्थशास्त्र, नर्सिंग प्रशिक्षण, शिक्षक प्रशिक्षण तथा ललित कलाओं को स्थान प्रदान किया है।

विशेष : डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन (5 सितम्बर 1888 - 17 अप्रैल 1975) भारत के प्रथम उप-राष्ट्रपति (1952 1962) और द्वितीय राष्ट्रपति रहे। वे भारतीय संस्कृति के संवाहक, प्रख्यात शिक्षाविद, महान दार्शनिक और एक

आस्थावान हिन्दू विचारक थे। सन् 1954 में भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से अलंकृत किया था। उनका जन्मदिन (5 सितम्बर) भारत में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है।

डॉ० राधाकृष्णन के यूरोप एवं अमेरिका प्रवास से पुन भारत लौटने के बाद विभिन्न विश्वविद्यालयों ने उन्हें मानद उपाधियाँ प्रदान कर उनकी विद्वत्ता का सम्मान किया। इनकी शिक्षा सम्बन्धी उपलब्धियों के दायरे में निम्नवत संस्थानिक सेवा कार्यों को देखा जाता है :-

- सन् 1931 से 36 तक आन्ध्र विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रहे।
- ऑक्सफर्ड विश्वविद्यालय में 1936 से 1952 तक प्राध्यापक रहे।
- कलकत्ता विश्वविद्यालय के अन्तर्गत आने वाले जॉर्ज पंचम कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में 1937 से 1941 तक कार्य किया।
- 1939 से 1948 तक वे काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1953 से 1962 तक दिल्ली विश्वयविद्यालय के चांसलर रहे।
- 1946 में युनेस्को में भारतीय प्रतिनिधि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
- 1931 नाइट बैचलर सर की उपाधि आजादी के बाद उन्होंने इसे लौटा दिया।
- 1938 फेलो ऑफ दी ब्रिटिश एकेडमी ।
- 1954 भारत रत्न ।
- 1954 जर्मन "आर्डर पौर ले मेरिट फॉर आर्टस एंड साइंस ।
- 1961 पीस प्राइज ऑफ थे जर्मन बुक ट्रेड ।
- 1962 उनका जन्मदिन ५ सितम्बर शिक्षक दिवस में मानाने की शुरुआत ।
- 1963 ब्रिटिश आर्डर ऑफ मेरिट ।
- 1968 साहित्य अकादमी फेलोशिप, डॉ राधाकृष्णन इसे पाने वाले पहले व्यक्ति थे।
- 1975 टेम्प्लेटों प्राइज (मरणोपरांत) ।
- 1989 ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा उनके नाम से Scholarship की शुरुआत ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

- पाठक, पी.डी. और त्यागी, शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
- भटनागर, आर. पी. "शिक्षा अनुसंधान मेरठ आर. लाल बुक डिपो ।
- लाल रमन बिहारी "भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएँ मेरठ, आर. लाल बुक डिपो ।
- लाल, रमन विहारी, शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, मेरठ रस्तोगी पब्लिकेशन।

- अदावत, सुबोध और उनियाल, माधवेंद्र भारतीय शिक्षा की समस्याएं तथा प्रवृत्तियां, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ, सन 1974।
- पाठक, पी. डी. एवं त्यागी जी. एस. डी. भारतीय शिक्षा के आयोग, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
- पाल, एस. के. एवं अग्रवाल, के यल शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, गोरखपुर, वसुंधरा प्रकाश, सन 1975।
- सक्सेना, डॉ. सरोज, शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार।
- सईदेन, ख्वाजा गुलाम, भारतीय शैक्षिक विचारधारा मेरात मीनाक्षी प्रकाशन, बेगम ब्रिज 1975 |
- पचौरी, गिरीश एवं रितु "उभरते भारतीय समाज में शिक्षक की भूमिका" मेरठ, आर. लाल बुक डिपो।
- पाण्डेय रामशकल "उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।

इंटरनेट लिंक:-

- **www.iep.utm.edu/radhakri**
- **https://en.m.wikipedia.org/wiki/sarvepalli-radhakrishnan**
- **www.liveindia.com/freedomfighters/11.htmt**
- **www.raujodhpur.org**
- **www.sarvepall.com**
- **http://www-sahisamay-com/2008/dr_saravapalli_radhakrishnan**
- **http://www.hindikunj.com/2016/06/higher education-in-india.html**